

धर्म जीवन

फरवरी 2004

- ☆ भजन
 - ☆ मां के रूप
 - ☆ जीवन की रचना कर्ता
 - ☆ बच्चों की आवश्यकता बजुर्ग
 - ☆ गुण चिंतन
- ☆ बच्चों में अनुशासन
- ☆ चण्डीगढ़ में माता पिता व्रत

भजन

मेरी माता जन्म दाता, तुम्हीं से ज़िन्दगी मेरी,
तुम्हीं रक्षक सदा मेरी, तुम्हीं पुष्टों पनाह मेरी।

तेरा उल्फत भरा दिल, गर न होता पासबां मेरा,
तो बेहोशी में जाने क्या, हुई होती दशा मेरी।

कड़ाकेदार जाड़ों में, अगर मैं रात को उठती,
किसे बेदार करती थी, सिवा तेरे सदा मेरी।

अंधेरी रात तूफां में, कलेजे से लगा लेती,
मुबादा खौफे दहशत से, हो जा नन्हीं हवा मेरी।

जबाने बेजुबानी में, जो मैं कुछ बात करती थी,
कोई समझे न मतलब तू, समझती बात का मेरी।

हुई बीमार मैं और रात दिन तड़पा किया तूने।
मुसीबत तुम पे होती थी, मुसीबत से सवा मेरी।

अजब तासीर हाथों में है, रंजो गम भुलाने की,
नज़र उल्फत भरी तेरी, है दुखों की दवा मेरी।

मेरे दुख के तेरे दिल में, खटकने से यह साबित है,
बना रखी है अपने दिल में, तूने इक जगह मेरी।

कोई साथी रफीक ऐसा नहीं, जैसी कि तू माता,
वह साथी ऐश के और तू शरीक हर बला मेरी।

दिया उपकार का बदला, तुझे उल्टा सताया है,
मुझे अब याद आती है वफा तेरी जफ़ा मेरी।

कभी शिकायत न इस पर भी, जबां से तेरी सुन पाया,
तुझे देखा तो बस करते हुए सिफ़तो सना मेरी।

रही ग़फ़लत में गो बरसों, अलम दिल में समाया है,
मैं अब तुम्हारी बन जाऊं, रही है तू सदा मेरी।

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 2

फरवरी 2004

सम्पादक

डा. विनोद खेड़ा

वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सह सम्पादिका

सुरजीत बराड़

मां का रूप

“मैं जो कुछ भी हूँ, और जो कुछ बनने की आशा करता हूँ, यह सब मेरी देवता स्वरूप मां के सदका है।” यह शब्द अब्राहम लिंकन ने उस समय कहे थे, जब वह अमरीका के प्रधान नहीं बने थे।

थामस ऐडीसन ने कहा है, “मुझे मेरी मां ने बनाया है, वह इतनी सच्ची और मेरे पर विश्वास करने वाली थी कि मुझे लगता था, कि मेरे लिए संसार में जीने की कोई वजह है, मां एक ऐसी जान है कि जिसे मुझे कभी निराश नहीं करना चाहिए।”

माता के अथाह ऋण की शहादत संसार के महा पुरुषों के जीवनो से प्रत्यक्ष मिलती है। ऐसे गिनती के ही महान पुरुष होंगे जो माता के प्यार के उत्साह भरे हुलारे के बिना ऊँचे उठे हों।

प्रसिद्ध कलाकार बेंजामिन कहा करते थे, “मां के एक चुम्बन ने मुझे पेंटर बना दिया।”

अधिकतर जन अच्छी प्रसिद्धि केवल अपनी सर्वस्व निछावर करने वाली, कुर्बानी की मूर्ति माताओं की कृपा से पाते हैं। हम देखते हैं कि कैसे गवर्नरों, मिनिस्ट्रों और लीडरों का जिन्दाबाद के नारों से स्वागत किया जाता है। परन्तु उनकी

सफलता की वास्तविक देवी बेचारी, अज्ञात, चुपचाप जीवन व्यतीत करने वाली अंधेरो में खोई हुई माता को कोई नहीं पूछता।

यह अजीब दास्तान है उस मां की। एक सृजनकर्ता को इतना कम महत्व दिया जाता है और संसार में सफलता प्राप्त करने वालों के साथ उसका नाम तक नहीं लिया जाता। संसार सफल बेटे को तो देखता है, पर मां जो उसे ऊपर ले जाने की सीढ़ी बनी, उसको बिसार दिया जाता है। उसका नाम या फोटो हम अखबारों में नहीं देखते जबकि प्यारी और मेहरबान मां ही इस सफलता को सम्भव बनाती है।

मां के भीतर से फूटने वाला प्यार का स्रोत हमारे भीतर की ईर्ष्या, द्वेष और घृणा भावनाओं का दमन करता है। संसार की महान नायिका मां है। न उस जैसी कोई कुर्बानी कर सकता है, न दुख और कष्ट सहन कर सकता है। मां बिना किसी शिकवा शिकायत के बच्चों की सेवा करती है।

मां अपने शरीर, खून, सुख आराम और मान सम्मान की खाद डालकर अपने बच्चों के

जीवन रूपी पौधे को सींचती है। एक एक अनपढ़ मां अपने बच्चों को पढ़ाने की खातिर मैंने देखा है कि किस प्रकार रात दिन मजदूरी करती है, कई बार शराबी कबाबी पति की अवहेलना और अपमान सहकर भी वह पैसे जोड़ जोड़कर बच्चों का खर्च पूरा करती है।

मैंने प्रिंसीपल होते हुए अपने अनुभव से कितनी माताओं को हाथ बांधे, पैरों को हाथ लगाते देखा है कि जिनके आर्थिक हालात ठीक नहीं, पति निखटू हैं, पर मां एक ओर पति का दुर्व्यवहार सहन करती है और दूसरी ओर मजदूरी करती है, फिर पति की विरोधता भी सहन करके बच्चों को शिक्षित बनाना चाहती है। एक मां की चार लड़कियां थीं। वह पहली क्लास से हमारे स्कूल में दाखिल की थी। मां की सेहत इतनी कमजोर दिखती थी कि उसके चेहरे का पीलापन उसके भूखे पेट रहकर बच्चों को पालना दर्शाता था, हमने जो सम्भव था उसे सहयोग दिया और उसकी बड़ी लड़की बारहवीं क्लास पास कर गई है, बाकी की भी ठीक पढ़ रही थी। उसकी याचना उसके मातृत्व को दर्शाती थी। अपने बच्चों के लिए सर्वस्व अर्पण करने वाली एक मूर्ति दिखाई देती थी।

इसी प्रकार एक एक मां को हम संघर्ष करते हुए देखते हैं कि वह चाहे कितनी थकी हुई हो, चाहे उसे आराम और सुख के कोई हालात उपलब्ध न हों, उसकी स्वास्थ्य चाहे कितना खराब चल रहा हो, चाहे नींद भी बच्चों की देख रेख में पूरी न होती हो, परन्तु वह कभी शिकायत नहीं करती। अपनी सहनशक्ति से वह सारे परिवार के जर्खों पर मरहम लगाती है।

मां की सुन्दरता इस संघर्ष में धीमी पड़

जाती है, चेहरे पर फिक्र और दुख की लकीरें उभर जाती है। उसके पास कुछ न रहे, परन्तु बच्चों को सुखी देखना चाहती है। बच्चों की सेवा में उसका अस्तित्व घुल जाता है, परन्तु वह शिकायत नहीं करती।

और साहसिक कार्यों के लिए सम्मान मिलता है, परन्तु मां के बलिदान और साहसिक कार्यकलापों का बदला बच्चे उसे दुखी करके चुकाते हैं। एक एक मां 6-6 और 7-7 बच्चों को पाल लेती है, परन्तु सारे बच्चे मिलकर एक मां को सुख पूर्ण जिन्दगी नहीं दे सकते, कितना बड़ा दुर्भाग्य!

बच्चों के लिए यदि कोई जान दे सकता है तो वह मां है। उसके लिए बच्चों के मुकाबले में जान की कीमत सस्ती है। इसलिए तैरना न जानकर भी एक एक मां अपने डूबते हुए बच्चे को बचाने के लिए पानी में छलांग लगा देती है।

अकसर परिवार में मां से अधिक किसी का पार्ट नहीं होता, परन्तु उसको अनादृत जीवन बसर करना पड़ता है। शादी होने के बाद लड़के अकसर घर में मां को अपने बच्चों की देखभाल की जिम्मेवारी सौंप देते हैं। मां से स्वार्थ सिद्धि की लालसा मनुष्य की बड़े होकर भी समाप्त नहीं होती। मां अपने हक के लिए बच्चों से नहीं झगड़ सकती। कभी कभी तो बच्चों की कृतघ्नता की सीमा पार हो जाती है जब मां को कुछ कुछ दिन बांट कर सम्भालने का प्रस्ताव रखते हैं, कभी कभी मां और बाप को अलग रहने के लिए मजबूर कर देते हैं - जिसमें बुढ़ापे का एक दूसरे का सहारा भी छिन जाता है।

अपने निकम्मे बेटे को भी कालिज तक पढ़ाने के लिए जिस मां ने किसी के बर्तन साफ

किए हों, कपड़े धोए हों और छोटे से छोटा काम करना स्वीकार किया हो, उस मां के दिल पर क्या गुज़रती होगी जब बेटा पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी और हालात रखकर मां से आखें फेर लेता है और उसे रहने और खाने के लिए अपमान जनक जीवन व्यतीत करना पड़ता है। परन्तु फिर भी मां बच्चे की शत्रु नहीं बन सकती, उनके लिए आशीष ही देती है। कहा जाता है कि एक कृतघ्न बेटा अपनी प्रेयसी के कहने पर मां का सिर काट कर ला रहा था, और रास्ते में किसी पत्थर से टकराकर गिर पड़ा और मां का सिर भी गिर गया और उससे आवाज़ आई कि बेटा कहीं चोट तो नहीं लगी। बेशक यह कल्पित कहानी है, परन्तु मां के विशाल हृदय की प्रतीक है।

मां की कुर्बानी और भी बढ़ जाती है, जब जवानी की उमर में उसका जीवन साथी बिछुड़ जाता है और 3-4 बच्चों का बोझ उस अकेली जान पर पड़ जाता है। वह जवानी में शादी करवा सकती थी, परन्तु बच्चों की खातिर वह अपना सुख पीछे छोड़ देती है फिर रात दिन मेहनत करके बच्चों की परवरिश में अपनी जवानी, अपनी सुन्दरता की आहुति दे देती है। नेचर ने मां के रूप में क्या सुन्दर मूर्ति घड़ी है। ऐसी कुर्बानी की मूर्ति बच्चों के मुख से प्यार और स्नेह के शब्द सुनने को तरस जाती है। कितना बड़ा दुर्भाग्य है मानवता का! मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति तब तक ही मां से सम्बंध रखती है, जब तक सुख मिलते हों, जब मां से सुख की आवश्यकता नहीं रहती, तो वह फालतू की वस्तु दिखने लगती है, उसके लिए घर में सबसे निकृष्ट कमरा निश्चित कर दिया जाता है, वह अपने बच्चों से बात करने को तरस जाती है। जब

मां के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं तो हम भूल जाते हैं कि वह समय दूर नहीं होता जब हम उस अवस्था में पहुंच जाएंगे और अपने बच्चों के सामने हमने जो आदर्श रखे हैं - वह उन्हीं का पालन करते हुए हमारी भी यही दुर्दशा करेंगे।

एक बड़ा सुन्दर उदाहरण पढ़ा था, जो बहुत सबक सिखाने वाला है। एक परिवार में बूढ़ी मां थी, जिसको सबसे घटिया रजाई दी हुई थी। घर में सबके पास रेशमी रजाईयां थी, उनका छोटा बेटा अर्थात् मां का पोता यह देखता था। एक दिन उसने अपनी दादी की आधी रजाई काट दी और अपने पास रख ली। जब उसके माता पिता को पता चला तो उन्होंने उसे खूब डांटा और पूछा कि आखिर उसने ऐसा क्यों किया? बच्चे ने भोलेपन से उत्तर दिया कि “मैंने देखा है कि हमारे घर में कोई पुरानी रजाई नहीं, जब आप बूढ़े हो जाओगे तो मैं आपको क्या दूंगा? यह रजाई मैंने आपके लिए रखी है”। यह सुनकर उसके माता पिता के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। और उस छोटे से बच्चे ने उन्हें अच्छा सबक सिखा दिया। यह सच्चाई है कि हम जैसा बोएंगे, वैसा ही काटेंगे। इसलिए माता का निरादर आपको अपने जीवन के लिए भी महंगा पड़ता है। बच्चों ने आपके संस्कार ग्रहण करने हैं। कितना सुन्दर दृश्य होता है, जहां माता पिता का आदर होता है, उन्हें उपयुक्त स्थान दिया जाता है। ऐसा करके बच्चे उनकी सच्ची खुशी प्राप्त करते हैं। जहां कृतज्ञ बच्चे हैं, वहीं माता पिता तिरस्कृत नहीं होते। माता के विषय में अलम साहिब ने बहुत सुन्दर भजन की रचना की थी जो सफा 2 पर दिया गया है।

सुरजीत बराड़

जीवन की रचना कर्ता

यदि कहीं एक जीवन दूसरे जीवन में जिया जा सकता है तो उसका नमूना माँ है। बच्चे की लोकप्रियता को कलंक लग गया है। दुनिया के लोगों ने उसे अपने द्वार से धतकार दिया है। तो भी माँ, जैसे वह बच्चे की सफलता पर उस बच्चे से भी अधिक प्रसन्न होती थी, वैसे ही उसकी हर बदनामी को उस से भी अधिक अपनाने में तृप्ति पाती है। पर साधारणतः बच्चों को माँ के प्यार का महत्व उसी समय अनुभव होता है जब यह महान प्यार उन से सदा के लिए छिन जाता है। बच्चों के दुर्गम पथ पर माता अपने अनुपम प्यार के पुष्प अंजलियाँ भर भर कर बखेरती रहती है। उन फूलों से भरे टेढ़े मेढ़े रास्तों पर बच्चे निर्भय होकर गुज़रते रहते हैं। इस बात से पूर्णतः अनजान कि कितनी बार इन फूलों की मोटी तह ने उन्हें गिरने से बचाया है। दुर्घटनाओं से भरे जीवन की फिल्म निरन्तर चलती जाती है और माँ का प्यार मंद, मधुर संगीत बन कर उसके साथ ताल देता रहता है। इस ताल का जीवन के सुखद प्रवाह के साथ क्या सम्बंध है, इसका ज्ञान उसी समय होता है, जब वह ताल टूट जाती है, और जीवन की फिल्म शुष्क होती हुई गिरारियों पर खड़खड़ाती चलती है।

संसार के महापुरुष इब्राहिम लिंकन, टैगोर ब्रनारडशा तथा अनेकों अन्य व्यक्ति अपनी माताजी को लिंकन के इन शब्दों में स्मरण करते हैं, जो कुछ मैं हूँ और जो कुछ मैं बनने की आशा रखता

हूँ अपनी फरिश्ता तुल्य माता के ही कारण है। बाल्यकाल में बच्चा अपनी माँ के तुल्य किसी खजाने को नहीं सोच सकता है। वह केवल अपनी माँ का दूध ही नहीं पीता, उसके हृदय के रक्त को कई प्रकार अपने प्राणों का अंश बनाता है। परन्तु बाल्यावस्था व्यतीत हो चुकने पर एक समय ऐसा आ जाता है कि जब माँ के हृदय के रक्त की मनुष्यों को आवश्यकता नहीं पड़ती। माँ के जीवन से बाहर उनके जीवन का ताना दूर या निकट कहीं और तना जाता है। उन्हें कई प्यार और कई साथी मिलते हैं। सफलताओं और मान यश का नशा होता है। उस समय वह कितने कितने समय तक अपनी माँ के अस्तित्व को ही भूल जाते हैं। अनेक बार पत्नी की ओर से माँ पर हुए अन्याय को भी अनुभव नहीं करते। माँ अपने पुत्र की सफलता के विषय में जानना चाहती है। पुत्र विस्तारपूर्वक बात करने का समय नहीं निकाल सकते। माँ अपने पुत्रों की चिन्ताओं में भी भाग लेना चाहती है। पुत्र अपनी चिन्ताओं को माता की शक्तिहीन अवस्था से ऊपर समझ कर चुप रहते हैं। माँ को मिले बिना ही वह कई बार बाहर चले जाते हैं। जब वह घर वापिस आते हैं तो अनेक बार माँ की बाहें खुली की खुली ही रह जाती हैं और पुत्र नमस्कार करके जल्दी जल्दी पास से गुज़र जाते हैं।

जवान बन कर पुत्र समझता है कि अब उसका अपना जीवन इतना बलवान हो गया है कि

बूढ़ी माँ, अब उसे कोई बल प्रदान नहीं कर सकती। वह नहीं जानता कि जीवन उपरोक्त बल से भी अधिक सहानुभूति और प्यार का मोहताज है। और माँ को छोड़ कर किस का प्यार स्थाई है और किस की सहानुभूति और सराहना अटल है। अच्छे अच्छे मित्रों की मित्रता में उदासीनता आ जाती है? पति पत्नी की वफादारी लड़खड़ा जाती है।

तुम्हारे घर का वह स्थान जहाँ तुम्हारी माँ तुम्हारे कामों में दखल न देती हुई भी तुम्हारे लिए शुभ कामनाएं करती रहती है, वह निर्मल मधुर सा स्रोत है। जब तुम हंसते आते हो तो इस स्रोत के निर्मल जल पर तुम्हारी हंसी की प्रत्येक रेखा एक नृत्य करती लहर बन जाती है। परन्तु जब तुम उदास मुख से उसमें झाँकते हो तो उसका जल तुम्हारे खारे आंसुओं को अपना कर उन में अपनी मिठास भर देता है।

वृद्ध माता यद्यपि आज तुम्हारे घरेलू जीवन में कोई कार्यगत भाग नहीं ले सकती, परन्तु तुम्हारे घर के वायुमंडल को सुखी बनाने में उसके प्यार, उसकी आशीश, उसके आलिंगन तथा उसकी सहानुभूति का अभी भी सब से बड़ा हाथ है। इसके महत्व का आभास तुम को उस दिन होगा जिस दिन तुम्हारे घर का वह प्यार भरा कोना सहसा शून्य हो जाएगा। और उन सहज स्वभाविक आशीषों का स्रोत शुष्क हो जाएगा। तब तुम्हें वह दिन याद आएंगे कि जब तुम माँ के कमरे में प्रवेश करते थे, तो उसके दुर्बल नेत्रों में एक चमक आ जाती थी, तथा जब कभी तुम्हारा हृदय पट खुला होता था तो तुम्हारा सारा संसार उस चमक से चमचमा ही उठता

था। निर्बल बाहें जब तुम्हें गले लगाती थी तो तुम्हारे अंग अंग से जीवन की थकावट खींच लेती थीं। तुम्हारे अंग तुम्हारे प्रत्येक संकट में बाहें डालने वाली माँ जब विदा हो जायेगी। तब तुम उन अतुल्य निसंकोच और अटूट कामनाओं का महत्व जान सकोगे जो उसके हृदय से एक नदी के समान प्रवाहित होती रहती थी, जीवन भी एक बार होता है और माँ का प्यार भी। इस प्यार का स्रोत जब सूख गया तो फिर ऐसे प्यार की कोई लहर तुम्हारे जीवन को स्पर्श नहीं करेगी और सारे प्यार कमाए जा सकते हैं, ढूँढे जा सकते हैं, परन्तु माँ का प्यार एक वरदान है। जब तक है, है। जब खो गया तो फिर कोई वस्तु उसकी पूर्ति नहीं कर सकती। इस वरदान का लाभ न्यूनाधिक सभी बालक प्राप्त करते हैं। परन्तु इसका स्वर्गीय रस वही पान कर सकता है जो बाहर जाते समय माँ की आशीश मांगता और घर आने पर माँ से गले मिलता है, उसके पास बैठता है उसकी प्यार भरी आंखों को देखता है, और जब माँ बड़ी उमंग से कहती है, लाल कोई अच्छी सी बात सुनाओ तो वह इस सोच में नहीं पड़ता कि राजनैतिक बातें माँ समझेगी नहीं, नए साहित्य में उसकी दिलचस्पी नहीं। उसने माँ की दुनियां में एक आयु व्यतीत की है। इस दुनियां की कई मधुर स्मृतियाँ हैं। जब जीवन में उसकी माँ का बड़ा विशाल स्थान होता था। किस प्रकार माँ ने बड़े संकट के दिन बहुत साहस से काटे थे। किस प्रकार जवान विधवा ने खानदान की इज्जत सम्भाल कर रखी थी। किस प्रकार पड़ोसियों से सराहना प्राप्त की थी। माँ को उन दिनों की याद दिलाता है जब उसने

अपने सारे गहने बेच कर उसे कालिज भेजा था। वह दिन याद कराता है कि जब उसने एक दिन बड़ा झूठ बोला और वह अत्यंत लज्जित होकर जीने की अपेक्षा मौत की याचना करता था, परन्तु जब साहस करके उसने अपना दुख माँ पर प्रकट कर दिया तो माँ (यद्यपि अपने गलत विश्वास के अनुसार - स. जी. प.) ने उस झूठ को अपना कर भी उसे सच बना दिया। न भाईयों को और न बहनों को कभी उस झूठ का पता लगा।

माँ की अन्तिम कामना यह होती है कि वह अपने पुत्रों के हाथों में ही अपना अन्तिम श्वास छोड़े। उसे अपने किसी बच्चे का दुख न झेलना पड़े। स्वभाविक भी यही है कि माँ अपने पुत्रों से पहले ही पहले अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर ले। सौभाग्यवान माताएं अपने पुत्रों की गोद में ही अपने प्राण त्याग करती हैं। पुत्र जो पश्चाताप के कड़वे आंसुओं से बचना चाहते हों तो वह आज ही अपनी माता के पास जाएं। उसकी अपने बच्चों के लिए व्याकुल बाहों को अपने गले में डालें। उसका प्यार अपने माथे पर अनुभव करें। पुत्र अपनी माँ को यह बताने में आनन्द प्राप्त करें कि उन्हें अपने असीम धन (माँ के प्यार) की कदर है। यह ठीक है कि तुम्हारे नौकर या तुम्हारे बच्चे तुम्हारी माँ की सेवा करते हैं। तुम किसी को माँ का निरादर भी नहीं करने देते। परन्तु केवल यही सब कुछ नहीं। तुम्हारी माँ ने तुम्हारे काम स्वयं ही किये थे। जब तुम कहानी सुनना चाहते थे तो उसने कभी यह न सोचा कि वह तुम्हें क्या सुनाए। उसे पता होता था कि किस समय तुम्हें कौन सी कहानी

अच्छी लगती है। तुम्हारे बच्चे अच्छे हैं। तुम्हारे मित्र भी तुम्हारी माँ का आदर करते हैं, परन्तु यह मत भूलो कि यह दुनिया तुम्हारी माँ के लिए औपरी होती जा रही है। उसके नये रिवाज, उसकी नई चाल, उसके नये मूल्य आए दिन उसके लिए पराए होते जाते हैं। तुम्हारे जवान होते हुए बच्चे बूढ़ी दादी का आदर तो कर सकते हैं पर उसके साथ बातचीत नहीं कर सकते हैं। केवल एक तुम ही सारे घर में माँ की दुनिया का एक अंश हो कि जिस अंश को वह भली भाँति पहचानती है। वह तुम्हें अकेले मिलने की प्रतीक्षा में घड़ियां गिनती रहती है। यदि तुम उसकी बातें हुँकारा देकर नहीं सुनते, यदि तुम अपने हाथ से माँ पर पंखा नहीं झुलाते, उसके बिस्तर की सिलवटें नहीं निकालते, तो एक दिन तुम इस अवसर को तरसोगे। माँ की वस्तुओं से बातें करोगे। उन वस्तुओं को गले से लगाओगे। परन्तु माँ अब तुम्हारे काफले के साथ नहीं। तुमने उस प्यारे शरीर का अपने हाथों संस्कार कर दिया है कि जिस शरीर से तुम्हारा अपना शरीर उत्पन्न हुआ था।

तुम जीओगे परन्तु पहले की न्याई अपने को भरा पूरा अनुभव नहीं कर सकोगे। पर यदि तुम उन विरले जनों में से हो कि जिन्होंने अपनी माँ के अन्तिम वर्षों को सुखी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, तो तुम्हारा मन पछतावे से मुक्त सदा यह अनुभव करेगा कि मानो तुम्हारी माँ सदा तुम्हारे अंग संग है।

श्रीयुत सरदार गुरबरख्शासिंह जी प्रीत लड़ी
के एक पंजाबी लेख का सरल अनुवाद

मेरी माँ सबसे अच्छी

किसी ने सच ही कहा है कि बच्चों की दुनिया अलौकिक है, अद्भुत है और आराध्य है क्योंकि बच्चे का मन छलकपट से दूर होता है। बच्चों के कोमल मन को मां हमेशा अपने स्नेह की छाया में रखती है। इस ममता का अंकुर उसी क्षण स्त्री के मन में पड़ जाता है जब बच्चा कोख में आता है बच्चे की उम्र बढ़ते हर साल में एक नया अनुभव, खुशी और सुकून समेटे मां जिस बच्चे को उंगली पकड़ कर चलना सिखाती है वही ढलती उम्र में उस का सहारा बनने लगता है।

उम्र के हर साल में हर चीज के प्रति बच्चे का नज़रिया बदलता रहता है पर मां के बारे में उस की सोच हमेशा एक सी ही रहती है उस की मां दुनिया की सब से अच्छी मां है। इन बच्चों के विचार भी अपनी मां को ले कर कुछ ऐसे ही हैं।

23 वर्षीय सिमर अपनी 45 वर्षीय मां के बारे में कहती है, “जब से मैं ने होश संभाला, मां को अपने ही आसपास पाया है। बचपन से अब तक मां के पास मेरी हर समस्या का हल रहता है। हां, मैं यह नहीं बता सकती कि मातापिता में सब से अच्छा कौन है। “जवाब देना मेरे लिए मुश्किल है। मेरे पापा मुझे उतना ही प्यार करते हैं जितना मां और मैं भी उन से उतना ही प्यार करती हूँ जितना मां से।”

कभी ऐसा हुआ कि आप की मम्मी ने आप को मारा या डांटा हो और आप को गुस्सा आया हो?

“हां, एक बार ऐसा हुआ जब मेरी मां ने मुझे एक चांटा मारा और वह भी पढ़ाई की खातिर क्योंकि मैं कुछ दिनों से पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रही थी। चांटा खा कर गुस्सा तो आया पर जैसे आया वैसे ही चला भी गया। पर मां कभी इस कारण बुरी लगी हों ऐसा नहीं क्योंकि बड़ा होने पर यह समझ आने लगती है कि मां का चांटा या डांट एक वार्निंग अलार्म है जिसे हम सुन लें तो हमारे लिए अच्छा होता है।

आप को अपनी मां की वह कौन सी बात दूसरों की मां से ज्यादा अच्छी लगती है ?

“मुझे अपनी मां दुनिया की सब से अच्छी मां इसलिए लगती हैं क्योंकि उन्होंने हम भाईबहन पर विश्वास किया, जो मुझे अपनी सहेलियों की माताओं में देखने को नहीं मिलता। फलस्वरूप वे अकसर अपने मम्मीपापा से झूठ बोल कर इधर इधर आती हैं, यानी घूमनेफिरने, फिल्म देखने आदि।”

आप को मां की जरूरत कब सब से ज्यादा महसूस होती है ?

“जब मां कहीं बाहर गई होती है और मुझे अपनी कोई बात उन से शेयर करनी हो क्योंकि तब मुझे लगता है मेरी मां ही मेरी सब से करीबी फ्रेंड हैं। उन से मैं उन सीक्रेट्स को भी कह लेती हूँ जिन्हें अपनी हमउम्र फ्रेंड्स से भी नहीं कर पाती हूँ।

अग्रसेन कालेज से इंग्लिश में आनर्स कर रही 20 वर्षीय शिखा अपनी 48 वर्षीय मां के बारे में कहती है, “मेरी मां हमेशा मुझे सब से अच्छी इसलिए लगती है क्योंकि मुझे और मेरी बड़ी बहन को उन्हें किसी चीज के लिए कभी नहीं कहना पड़ा। कब हमें किस चीज की जरूरत है, वह चेहरे को देख कर ही समझ जाती हैं।”

कभी आप को यह महसूस हुआ कि आप की सहेलियों की मम्मियां आप की मम्मी से ज्यादा सुन्दर या स्मार्ट हैं?

“हर बच्चे को अपनी मां अच्छी ही लगती है। फिर मैं अपनी मां को किसी की मां से तुलना करना ठीक नहीं समझती। मुझे अपनी मां से ज्यादा अच्छी किसी की मां नहीं लगती। उन का प्यार भरा हाथ हर समय मेरे सिर पर होता है।”

बढ़ती उम्र के कारण आप की मां में कुछ न कुछ तो फर्क आया ही होगा। क्या वह आप को अच्छा लगता है।

“वैसे तो मुझे उनके सफेद केश या और कुछ बुरा नहीं लगता पर मां जब थकी नज़र आती हैं या बीमार दिखती हैं तो किसी काम में मन नहीं लगता। बस ऐसा लगता है मां कभी बीमार न हों, हमेशा चुस्तीफरती से काम करती हंसती, डांटती ही दिखाई दें।”

“उन की केयरिंग नेचर देख कर ऐसा लगता है कि मम्मियां कैसे समझ लेती हैं कि बच्चा किस दुख तकलीफ से गुजर रहा है। मेरी मां की यह खासियत ही उन्हें सब से अच्छी मां बना देती है।”

दिल्ली विश्वविद्यालय में इकोनोमिक्स

(आनर्स) का छात्र मयंक कहता है “मैं आप को यह नहीं बता सकता कि मेरी मां मुझे क्यों अच्छी लगती है। बस वो अच्छी लगती हैं उनका हंसना बोलना, डांटना सब कुछ अच्छा लगता है। मगर मुझे सबसे ज्यादा डर लगता है उन की चुप्पी से। उन की चुप्पी उन की नाराज़गी ज़ाहिर कर देती है पर वह थोड़े समय की ही होती है।

“हां अगर कोई यह पूछे कि मां दूसरों की मां से अच्छी कैसे तो मुझे अपनी मां की आवाज़ बहुत पसंद है। फिर एक डाक्टर की हैसियत से मां जब मेरे दोस्तों को और उनके परिवार वालों को साफ्टली ट्रीट करती हैं तो उन से अपनी मां की तारीफ सुन कर बहुत खुशी होती है। सच मेरी मां सब से अच्छी मां है।”

आप को मां में सब से बुरा क्या लगता है?

“मुझे मां में कुछ भी बुरा नहीं लगता पर कभी कभी उन के द्वारा क्लीनिक की टेंशन घर लाने पर खीज जरूर होती है। पर जब उन्हें कह दो कि आप काम की चिड़चिड़ाहट को घर क्यों लाती हो तो वो खुद पर कंट्रोल कर लेती हैं।”

आप की मां 40 की उम्र में अच्छी लगती हैं या जब आप छोटे थे और उन की उम्र कम थी तब अच्छी लगती थीं?

“मां तब भी अच्छी लगती थी और अब भी। हां उन के बूढ़े होने का एहसास होने पर मन में असुरक्षा की भावना जरूर उत्पन्न होने लगती है।”

15 वर्षीय 10वीं कक्षा की छात्रा मिताली

कहती है, “मां तो अच्छी लगती ही है पर पिता के मैं ज़्यादा क्लोज हूँ मगर कुछ समय से मुझे मां भी करीब महसूस होती है। अब मां मां कम फ्रैंड ज़्यादा दिखती है। मां की उत्साहित करने की आदत मुझे सब से ज्यादा पसंद है।”

आप को अपनी मां दूसरों की मां की तुलना में कैसी लगती है।

“मां तो सभी की अच्छी हैं किसी को भी बुरी नहीं लगती होती। पर मेरी मां की खासियत उन की व्यवहारकुशलता है जिस की मेरी सभी फ्रैंड्स भी बहुत तारीफ करती हैं।”

जब मिताली की मां से पूछा गया कि आप की और आप की बेटी की रिलेशनशिप और आप की और आप की मां की रिलेशनशिप में क्या फर्क महसूस होता है तो वह बोली, “मेरी और मेरी मां की रिलेशनशिप जितनी अच्छी और क्लोज थी उतनी मैं अपनी बेटी मीता के बीच चाहती हूँ क्योंकि मुझे महसूस होता है कि मेरी बेटी मिताली मुझ से उतनी नहीं खुली है जितना मैं अपनी मां से

खुली थी पर इस लिए सिर्फ मीता को जिम्मेवार नहीं मानती। मेरी तरफ से भी जरूर कोई कमी होगी। मगर कुछ समय से मैं महसूस कर रही हूँ कि पहले की तुलना में अब ज्यादा करीब आ गई है। मैं यह चाहती हूँ कि तन और मन से जितनी सुन्दर मेरी मां थी मैं भी वैसी ही सुन्दर बनूँ।

उम्र का कोई भी दौर हो, मां बच्चे का संबंध हमेशा खूबसूरत रहता है, बच्चा चाहे छोटा हो या जवान, मां हमेशा मां ही रहती है और बच्चा बच्चा ही। हर बच्चे को अपनी मां अकसर दूसरों की मां की तुलना में अच्छी ही लगती है। मगर बढ़ती उम्र के कारण मां के चेहरे की थकान बच्चों को असुरक्षा महसूस करा देती है। चाहे मां मारे, डांटे या फटकारे, उस का प्यार से दुलारना और स्नेहिल संबोधन सारे गिलेशिकवे दूर कर उसे दुनिया की सब से अच्छी मां बना देता है।

(दैनिक भास्कर से आभार)

बच्चों की आवश्यकता – बजुर्ग

बच्चे को जन्म से माता पिता वा बजुरगों से जो शारीरिक, मानसिक वा हार्दिक योग्यता मिलती है, उस पर माता पिता का कोई ज़ोर नहीं होता, हां उनके सद् विचार अवश्य उस योग्यता को भी प्रभावित करते हैं, परन्तु बच्चों की पालना किस ढंग से होती है, कैसा वातावरण उन्हें दिया जाता है, इस पर बच्चे का व्यक्तित्व निर्भर करता है।

आजकल भागदौड़ के युग में माता पिता के पास पर्याप्त समय नहीं होता कि वह बच्चे को भरपूर प्यार दे सकें वा उनके साथ समय बिता सकें। ऐसे हालात में घर के बजुरगों दादा, दादी, नाना, नानी की मुख्य भूमिका होती है, क्योंकि जीवन की जिम्मेदारियों से खाली होकर उनके पास इतना समय होता है कि वह नन्हें बच्चों को पूर्ण प्यार,

दुलार दे सकें और जीवन के अच्छे मूल्य सिखा सकें।

इसके लिए माता पिता को अपने माता पिता का स्वयं सत्कार करना आना चाहिए और बच्चों को भी ऐसी शिक्षा देनी आवश्यक है। आप जैसे बीज बोओगे, वैसे ही काटोगे। जिन घरों में नन्हें बच्चों के माता पिता अपने माता पिता का सत्कार करते हैं, उनके बच्चे वैसे ही संस्कार ग्रहण करते हैं, यदि घर में बजुरगों का अनादर है, तो आप भी अपने बुढ़ापे में उसके परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें।

साधारणतः आजकल आधुनिक विचारों की लड़कियां, थोड़े कम पढ़े लिखे सास ससुर की उपेक्षा करने लगती हैं, तो वह एक ओर तो गलत उदाहरण अपने बच्चों के सामने पेश करती हैं, दूसरा बच्चे भी दादा दादी के प्यार से वंचित हो जाते हैं। कई बार बच्चे माता पिता का ऐसा व्यवहार देखकर अपने माता पिता से ही घृणा करने लगते हैं।

घर के बड़ों को सम्मान देने से कई समस्याओं का समाधान हो जाता है। उनका स्नेह और सहयोग भी मिलता है और कई प्रकार की कीमती सलाह भी मिलती है। दिन में कुछ समय जरूर घर के बजुरगों के साथ बिताएं। चाहें आप कोई हाथ का काम लेकर ही उनके पास बैठ जाएं और उनकी दिलचस्पी की बातें करें। उससे आप उनका आशीर्वाद ही पाएंगी। कभी उनके हम उमर लोगों से मिलने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें और आप कहीं जाते जाते छोड़ आएँ और आते हुए लेती आएँ। हो सके तो पिकनिक आदि में उनको साथ

लेकर जाएँ, इससे बजुरगों को जीवन बोझ नहीं लगता।

माता पिता इतने माईन न होने की सूरत में भी अपने दोस्तों मित्रों से मिलवाने में हिचकिचाएँ नहीं, बल्कि उनकी पोशाक आदि का ध्यान रखें ताकि तुम्हें कभी शर्मिदा महसूस न करना पड़े, यह आपके हाथ में है। कई बार बजुरग नये कपड़े या नई शाल लेने को नहीं मानते, परन्तु आपका प्यार, बार बार का अनुरोध उन्हें आपकी बात मानने को मजबूर कर देगा।

यह ध्यान रखें कि बजुरगों का कमरा, अपने कमरे से भी साफ हो, उनका बिस्तरा साफ हो। कमरे में, बाथरूम में उनकी आवश्यकताओं का पूरा सामान हो। सर्दी के मौसम में हीटर आदि का प्रबंध हो। आपकी जैसी हैसीयत हो, उसके अनुसार उन्हें सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए, ताकि बजुरग प्रसन्नचित रहें और घर का वातावरण खुशनुमा रह सके। बजुरगों के जन्म दिन मनाएं, चाहे सादे ढंग से ही। उनके लिए छोटे छोटे गिफ्ट दें। मुझे याद है कि मेरी माता जी का जन्म दिन हम सब बहन भाई मनाते थे। हमारे लिए वह एक त्यौहार सा था। 3-4 वर्ष पहले मेरी 7-8 वर्ष की पोती मेरे साथ थी। जब मैं अपने माता जी के लिए गिफ्ट लेने लगी तो वह झट से बोली, मैंने भी बेजी को कुछ देना है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई, और उसने खूब सोचकर छोटे छोटे Hand Towels का एक set खरीदा जिसमें सोमवार से ईतवार तक के नाम लिखे थे। जब उसने वह उपहार दिया, तो जहां मेरे माता जी को अत्यधिक प्रसन्नता हुई, वहां

जब भी हम जाते और वह रूमाल उनके पास होता तो अवश्य ज़िक्र करते कि यह मेरी फेथ ने मुझे दिए हैं। सब को बताती। कितनी छोटी बातों से हम अपने बजुरगों की खुशी का कारण बन सकते हैं।

इसी बच्ची ने मेरे जन्म दिन पर अपने जमा किए जेब खर्च के तीन सौ रूपये में पर्स खरीदा। मुझे पता नहीं लगने दिया किसी को साथ लेकर गई। यह संस्कार घर को खुशियों से भर देते हैं। कहीं घूमने के लिए जाओ, यदि बजुरग घर में हैं, तो उनके लिए कोई उपहार लाना न भूलें। यह छोटी छोटी बातें बड़ी बड़ी खुशियों

का कारण बनती हैं।

स्वयं भी सुबह उठकर अपने बुजुरगों को प्रणाम करें और बच्चों को भी यह अभ्यास डालें, फिर देखो बजुरगों की ओर से कैसे आशीर्वाद की झड़ी लग जाएगी।

कई बार आपके प्रयास भी सफल नहीं होते, इससे हमें यह सब करना पड़ेगा कि उमर के साथ स्वभाव में कई बार चिड़चिड़ापन आ जाता है। उसकी ओर ध्यान न दें, अपने कर्तव्य पालन करते रहें। इससे आपको आत्म संतुष्टि अवश्य मिलेगी।

सुरजीत बराड़

गुण चिंतन

‘गुण चिंतन’ का शब्द मेरे सत्गुरु की देन है। जब हम किसी के गुण चिन्तन करते हैं तो हमारा अहं कम होता है और दीनता आती है और इससे भी आगे उन गुणों को बार बार चिन्तन करते हुए, उन गुणों को अपनी क्षमता के अनुसार ग्रहण करने की योग्यता भी विकसित होती है।

आजकल माता पिता के सम्बंध में विशेष दिन चल रहे हैं, इनमें मेरा ध्यान अपने माता पिता के गुणों की ओर गया है और आज जब वह दोनों ही इस संसार में नहीं रहे तो यह अंक उनकी याद में ही समर्पित है।

मेरे पिता जी बहुत उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं थे, परन्तु अपनी अच्छी मानसिक योग्यताओं और

कड़ी मेहनत के कारण उन्होंने होम्योपैथी डाक्टरी में प्रशंसनीय योग्यता विकसित कर ली थी। इसमें उन्होंने धन भी कमाया और अपनी गहरी हमदर्दी के कारण लोगों का दिल भी जीता। गांवों में लोग उन्हें मसीहा समझते थे। गरीबों की धन से, दवाई से सेवा करके वह संतुष्ट होते थे।

पिता जी अनथक मेहनत कर सकते थे। अपनी प्रैक्टिस के समय रात के किसी भी समय कोई आ जाता, उसी समय घोड़ी पर सवार होकर वह चल पड़ते। गुरु महाराज के मिशन में लगने के बाद भी उन्होंने अपने अनथक संग्राम के द्वारा जगह जगह मन्दिर बनवाने, मुरम्मत करवाने में अनथक मेहनत के झण्डे गाड़ दिए थे। समाज के

लोग उन्हें “बूढ़ा जरनैल” कहने लगे थे।

पिता जी के भीतर गुरु महाराज के लिए बहुत गहरी श्रद्धा थी, इसी कारण विपरीत से विपरीत हालातों में भी उनकी यह श्रद्धा कम नहीं हुई। समाज से जोड़ने के लिए वह लोगों के पीछे पड़ जाते थे। परिवारों के परिवार उन्होंने समाज के साथ जोड़े।

पिता जी किसी के अभाव, विशेष रूप से आर्थिक अभाव को देखकर, उसकी सहायता के लिए तत्पर रहते थे।

पर सेवा को वह बहुत महत्व देते थे। हम बच्चों में से जो भी कोई दूसरे के लिए कुछ करता, उससे वह धन्य धन्य हो जाते और हमें दूसरों के काम आने के लिए सदा प्रेरित करते रहते।

हम बच्चे थे, परन्तु कई बार छोटी छोटी बातें हमारी सुनने के लिए बच्चों की तरह दीन बन जाते। बच्चों के प्रति भी जब उन्हें अपनी कोई गलती लगती तो फौरन क्षमा मांग लेते।

पिता जी ऐसे गुणवान रूप को सामने लाकर जहां में उनके आगे नतमस्तक हो रही हूं, वहां ऐसे गुणों को ग्रहण करने की कामना करती हूं।

मेरे माता जी भी विशेष मानसिक योग्यताएं रखती थी। वह तकरीबन अनपढ़ होकर भी बहुत सी पढ़े लिखों से अधिक सोच समझ रखती थी। खुद पढ़ी लिखी न होकर हमें पढ़ाने का उन्हें बेहद शौक था और इसके लिए वह बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने को तैयार थी। बचपन में जब हम पढ़ती तो अपना कोई काम लेकर हमारे पास बैठ जाती और पढ़ने के लिए उत्साहित करती।

मेरे माता जी में घरेलू कामों के लिए विशेष गुण थे। वह बहुत अच्छा खाना पकाती, सिलाई कढ़ाई का भी बेहद शौक था। बचपन में जब घरों में आम सिलाई मशीनें नहीं होती थी, तो वह अपने शौक से बहुत सुन्दर कढ़ाई करके हाथ से सिलकर हमारे फराकें डालती। अपने भी हमेशा सुन्दर कपड़े पहनती और वह शौक हम सब में पैदा किया ताकि हमारा व्यक्तित्व सदा आकर्षित बना रहे।

उनमें गज़ब का हौसला था। बुरे से बुरे हालातों में भी घबराने क बजाए वह मुकाबले के लिए कमर कस लेती और हार नहीं मानती थी। दूसरों को भी हौसला देती। कारोबार में वह बहुत परिपक्व सलाह देती। मशीनरी का बारीकी से उनको ज्ञान था। दूर से आते ट्रैक्टर की आवाज़ से ही उसके नुक्स को पहचान लेती।

सम्बंधों को निभाना भी उन्हें खूब आता था। जहां जो फर्ज होते उन्हें बहुत प्यार से पूरा करती। दूसरों के लिए कुछ करके सदा खुशी अनुभव करती। घर के नौकर चाकरों से उनका व्यवहार ममता से भरा होता था। हरेक उनके पास अपना दुख सुना लेता और अपनी सलाह और पैसे से उसकी सहायता करती रहती।

मेरे माता जी अथाह स्नेह का सागर थी। सब बच्चों को उन्होंने बहुत प्यार दिया। बच्चों को खिलापिला कर उन्हें असीम प्रसन्नता मिलती थी। बच्चों को किसी तरहकी में कभी रोड़ा नहीं अटकाया। जब किसी ने विदेश जाने का फैसला किया, तो बहुत मोह रखकर भी खुशी खुशी भेजा, जब फार्म से आकर चण्डीगढ़ आने का फैसला किया तो सोचने में एक मिनट नहीं लगाया कि यहां सैटल होने में पूरी मदद की।

दुनियां के पदार्थों और पैसों से उन्हें मोह नहीं था। बच्चों का मोह अवश्य था। फार्म एक पूरी स्टेट थी। बहुत बड़ा घर और सब आधुनिक सुविधाएं वहां पर पैदा की थी। परन्तु छोड़ते समय पीछे मुड़ के नहीं देखा। बल्कि बच्चों को उत्साहित किया और कुछ समय बाद फार्म बेच दिया, सारा पैसा बेटों के हवाले कर दिया, एक रुपया भी स्वयं नहीं रखा। कभी अपने पास पैसे नहीं रखती थी। बड़ी मुश्किल से बेटे 500-1000 उनके पास रखते, वह भी बच्चों को ही किसी न किसी तरह दे देती।

अपने स्नेह और कुर्बानी पर इतना विश्वास था कि बच्चे उनका फिकर स्वयं करेंगे। उनकी यह भी एक खूबी थी कि ऐसे बच्चे पैदा किए, जिन्होंने कीमती खजाने की तरह उन्हें सम्भाला, उनकी सेवा की उनके लिए नौकर, अच्छी से अच्छी सवारी, हजारों रुपये महीना दवाईयों का खर्चा, सब खुशी खुशी बच्चों ने किया। उनकी

जुदाई क्या बेटे और बेटियों के लिए, क्या बहुओं के लिए क्या हम सब बच्चों के लिए बेहद दुखदाई है। प्यार का एक चश्मा बिछुड़ गया। वह ममता मयी, दयालु, आत्म सम्मान से भरपूर माता का बिछड़ना बहुत सदमा है।

किसी ने सच ही कहा है कि मां वह बैंक है, जहां हम अपने सब दुख दर्द जमा करवा देते हैं। माता पिता जब तक रहते हैं, हम बूढ़े होकर भी बच्चे होने का एहसास रखते हैं। मैं निम्नलिखित शब्दों से उनको श्रद्धा के फूल अर्पित करती हूँ।

जिसमानी गठन पूंजी, दिल वा दिमाग की सब,
यह दान है तुम्हारा, मैं क्यों अकड़ रही हूँ।
मैं नाम को तुम्हारे, रोशन करूँ जहां में,
देवात्मा गुरु के यह असर पा रही हूँ।

सुरजीत बराड़

बच्चों में अनुशासन

फूल और बच्चे घर की शोभा बढ़ाते हैं। इन दोनों के होने से घर की सुन्दरता बढ़ती है, घर में रौनक आती है और बड़ों की नीरस जिन्दगी रसमय बनती है। जैसे जितने प्यार और ध्यान से हम पौधों को सींचते हैं और फिर कतर छांट कर उन्हें सुन्दर रूप देते हैं, वैसे ही बच्चों को हमारे असीम स्नेह की आवश्यकता है और साथ ही उनके व्यक्तित्व को चमकाने के लिए उन्हें अनुशासन में रखने की आवश्यकता है।

बच्चों को बेहद सुख सुविधाएं देने से ही माता पिता के कर्तव्य पूरे नहीं होते, उनके साथ समय बिताने और उनसे दोस्ताना सम्बंध रखकर ही हम अपनी ठीक बात उन्हें समझा सकते हैं। बच्चे तो कच्चे घड़े के समान होते हैं, उनको हम ठीक अनुशासन में ढाल सकते हैं।

अनुशासन के लिए एक और प्यार की आवश्यकता है, दूसरी और आपको अपना व्यवहार संतुलित रखना होगा। अधिकतर बच्चे संस्कार अपने

माता पिता के अचार व्यवहार से ही सीखते हैं। इसलिए यह अवश्य है कि माता पिता अपने व्यवहारों के प्रति सुचेत रहें।

आपका व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि बच्चे को यह ज्ञान हो जाए कि आप अच्छे बुरे कामों के प्रति गंभीर हैं। बच्चों को बड़े बड़े उपदेश नीरस लगते हैं। उन्हें कहानी अच्छी लगती है। ऐसी शिक्षाप्रद कहानियां सुनाएं जो उन पर अच्छा प्रभाव डालें। अनुशासन में रखने के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

1. बच्चों को कठपुतली न बनाएं, कि वह आपके ईशारों पर नाचें। अनुशासन का अर्थ यह नहीं कि बच्चे प्रश्न ही न करें, आपकी बात क्यों ठीक है, उसको तर्क के साथ समझाएं, जब बच्चे को अपने दिमाग से वह बात समझ आ जाती है, तो वह उसे पूरी करता है।

2. अनुशासित करने के लिए गलत शब्दों वा भाषा का प्रयोग न करें। बच्चे बार बार वही गलती करते हैं, तो भी उन्हें पहले प्यार से समझाएं, नहीं तो उन्हें इस प्रकार की सज़ा दें, जैसे यदि वह एक घण्टा टी. वी. देखता है, तो बंद कर दें यदि उसे आप पौकेट मनी देती हैं तो उसमें कटौती कर दें। परन्तु जो कहें उसे सख्ती से पूरा करें। यदि आप किसी काम में लगे हैं या कोई मेहमान आया हुआ है तो उसका लाभ उठाकर बच्चा उस सज़ा को कम करवाने का आग्रह करता है और आप दबाव में ढीले पड़ गए, तो हमेशा बच्चा उन हालातों का लाभ उठाएगा। सोचकर किसी बात का फैसला करें, परन्तु एक बार का फैसला फिर न बदलें।

3. बच्चे को ऐसी सज़ा न दें, जैसे अंधेरे कमरे में बंद करने की या कोई ऐसी जिससे डर और असुरक्षा पैदा हो।

4. बच्चों को भी अपनी दिक्कत कहने का अधिकार है, उनकी बातों को भी ध्यान से सुनें, फिर अपने तर्क से उसे उस प्रकार से समझाएं कि वह ठीक और गलत में अंतर कर सके।

5. बच्चों को जहां गलत बात पर समझाना आवश्यक है, वहां उसके कुछ ठीक करने पर उत्साहित करने की भी आवश्यकता है। साधारणतः माता पिता क्या करते हैं - जैसे बच्चा अच्छी ड्राईंग बना कर लाता है और माता पिता को दिखाता है कि देखो अध्यापिका ने मुझे good दिया है, उसे शाबाशी देने के स्थान पर, यह प्रतिक्रिया होगी कि चलो यह तो ठीक है, परन्तु अपने हिसाब और साईंस के नंबर देखें हैं, ऐसा कहते ही यदि आप पढ़ सकें तो बच्चे के मुख से हवाईयां उड़ जाती हैं। और वह निरुत्साहित होकर बैठ जाता है। इस बात का सदा ध्यान रखें कि आप यदि एक अच्छी बात के लिए शाबाशी देते हैं, तो दूसरे अभाव के लिए समझाएंगे तो बच्चे सुन भी लेंगे।

6. कई बार माता पिता बच्चों को जितना ध्यान और समय देना चाहिए वह नहीं दे पाते तो उसकी पूर्ति के लिए और आत्म-ग्लानि से बचने के लिए उनकी सब जायज़-नाजायज़ मांगें पूरी करते चले जाते हैं और बच्चों को हालात को हथियार के रूप में प्रयोग करने की आदत पड़ जाती है। और बड़े होकर भी वह अपनी मांगों को नाजायज़ तरीकों से पूरा करवाने के आदी बन जाते हैं।

7. बच्चों को अपनी पुस्तके, कपड़े और खिलौने ठीक स्थान पर रखने की आदत डालें। कुछ दिन लगातार आप खड़े होकर अपने सामने वह काम करवाएं। कई दिनों के अभ्यास से उनको अपना काम स्वयं करने की आदत पड़ जाएगी। एक उच्च शिक्षित लड़की के घर में उसके बेटों को यह आदत थी कि अपने कपड़े नहाकर बाथरूम में फेंक आते थे। एक दिन उन्हें बिठाकर समझाया कि यदि अब किसी ने कपड़े बाथरूम में फेंके तो 50-50 रुपये

तुम्हारी Pocket money से कट जाएंगे। बच्चों ने झट से कहा कि यदि आपका कपड़ा हुआ तब। तो उसने कहा कि मैं 50-50 रुपये तुम्हारे अकाउंट में जमा करवा दूंगी। इस प्रकार बच्चों की आदतें सुधारने के लिए कोई न कोई मार्ग अपनाएं, तो बच्चे तराशे जाएंगे और अच्छे नागरिक वा इंसान कहलाएंगे।

(सुरजीत बराड़)

चण्डीगढ़ में माता पिता व्रत

11 जनवरी एतवार के दिन चण्डीगढ़ में श्री सैक्टररी साहिब के मकान सैक्टर 21 डी में हमेशा की तरह आज एतवार का साधन हुआ। इसमें शामिल होने के लिए रायपुर रानी से दो जन, पंचकूला से तीन जन, दड़वां गांव से पांच जन और रायपुर कला से एक परिवार और जगदीश जी के साथी और सम्बंधी तीन परिवार, जगदीश जी का अपना सारा परिवार और उनकी बेटी मोना जी, खेड़ा साहिब का परिवार वशिष्ठ जी का परिवार और अन्य जन बहुत अच्छी संख्या में पहुंचे। उपरोक्त मकान की लॉबी में सुन्दर गलीचे और फोम के गद्दे बिछाकर और इर्द गिर्द कुर्सियां लगाकर बिछाई की गई। 40-50 जनों के बैठने के लिए स्थान तैयार किया गया और उस पर सफेद चदरें बिछाई गई। एक तरफ एक स्टेड पर सफेद चदर बिछाकर उस पर गुरु महाराज की बड़े साईज की फोटो शोभायान की गई। अर्चन

के लिए सुन्दर फूल रखे गए। बहुत से हार इस सभा के लिए मंगवाए गए। स्थानीय सेवक सेवका भी खुशी खुशी पहुंच गए।

सबसे पहले श्रीमान जगदीश जी ने, “जीवन ज्योति के तुम सूरज अंधेरा दूर करते हो” वाला भजन अच्छे भावों से भरकर सुन्दर लय में गाया। फिर सब ने खड़े होकर अर्चन के बाद देवस्तोत्र का गान किया और सभापति जी ने व्याख्या की। सबके बैठ जाने पर श्रीमान जी ने गुरु महाराज से उनके दान के लिए सहाय प्रार्थना की। इसके बाद श्रीमान जगदीश जी ने “श्रद्धा भाजन माता पिता जी”, वाला भजन दिली भावों से सुन्दर लय में गाया। सभापति जी ने अपना ब्यान शुरू करते फरमाया कि

भगवान देवात्मा ने इंसानियत को सुधारने के लिए, मलिनो दुष्टों व मिथ्या विश्वासियों को

सुधारने के लिए एक नए देव धर्म की स्थापना की है। देवात्मा सिर्फ मिथ्याचारों व आठ पापों से ही नहीं बचाते परन्तु अधिकारी आत्माओं को धर्म के मार्ग पर पहुंचाते हैं। अगर हम पूजा पाठ की वर्तमानता में भी नीच जीवन रखते हैं या हमारा नीच जीवन पहले से नहीं घटता या उससे निकलने के लिए कोई चिंता या ख्याल पैदा नहीं होता तो सब पूजा पाठ व्यर्थ है। भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि कभी मेरे नाम को जपने मत बैठ जाना अगर पूजा पाठ से कोई नीच चिंता या नीच गति बुरी मालूम नहीं होती व उससे बचने का ख्याल पैदा नहीं होता तो उस पूजा का कोई अर्थ नहीं।

इसके बाद दूसरी कसौटी यह है कि धर्म सम्बंधों में रंग दिखाएगा। अगर हमारे सम्बंध सही नहीं है तो हम धर्मवान नहीं हैं। गुरु महाराज फरमाते हैं कि जिसके सम्बंध खराब, उसका जीवन खराब व उसमें धर्म नहीं। गुरु महाराज ने 16 सम्बंधों की तरफ हमारा ध्यान फेरा है। गुरु महाराज ने पूजनीय चौथे देवशास्त्र में सबसे पहले माता पिता संतान के सम्बंधों का ब्यान किया है। किस प्रकार माता पिता का बच्चे के साथ सम्बंध होना चाहिए व किस प्रकार माता पिता के साथ बच्चों का सम्बंध होना चाहिए। उनका पाठ बार बार करना चाहिए।

सभापति जी ने अपनी एक घटना बताई कि किस प्रकार उन्होंने एक बार अपने बच्चों की किसी बात पर डांटा व शायद एक थप्पड़ भी लगाया। जो गुरु महाराज की रोशनी में नज़र आया है।

गुरु के बाद अगर हमारे लिए सभी सम्बंधों से बढ़कर कोई सम्बंध है तो माता पिता का सम्बंध है। जहां अगर कभी जान देने की भी जरूरत पड़े तो माता पिता ऐसा दिल रखते हैं कि जो अपनी संतान के लिए जान देने के लिए भी तैयार रहते हैं। ईरान की घटना बताई गई कि एक मां ऊपर से मलबा गिरने के कारण खुद तो मर गई परन्तु अपने बच्चे को बचा लिया। एक और घटना बताई गई कि किस प्रकार एक मां अपने बच्चे को बचाने के लिए अपने हाथ की उंगली दांतों से काटकर बच्चे के मुंह में डालती रही। वह 11 दिन तक एक एक उंगली काटकर ऐसा करती रही। किस प्रकार माता अपनी संतान के लिए अपनी जान की भी परवाह नहीं करती। इतिहास इस बात का साक्षी है। इसके बाद बाबर की घटना सुनाई गई कि किस प्रकार अपने बेटे को राजी करने के लिए अपनी जान देने के लिए राजी हो गया व आखिरकर इतिहास बताता है कि हुमायुं तो बच गया परन्तु बाबर ने अपने बेटे के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी। इन घटनाओं से हाजरीन पर अच्छा असर पड़ रहा था। फिर बताया गया कि मनुष्य पशुओं से आया है। पशु का बच्चा अपने माता पिता की सेवा नहीं करता। उसी तरह मनुष्य स्वार्थ से भरकर अपने माता पिता के लिए भयानक दृश्य पेश करता है। औरंगजेब की घटना बताई गई कि किस प्रकार उसका व्यवहार उसके पिता के सम्बंध में भयानक घटना है जो पांचों वक्त नमाज भी पढ़ता था परन्तु पिता के साथ व्यवहार नज़र नहीं आया। आखिर में तो उसको किसी अंश समझ आ गई।

कुछ चीजों की गणना नहीं हो सकती है।

जिस प्रकार पेड़ के पत्तों की गणना नहीं हो सकती, सिर के बाल गिने नहीं जा सकते, उसी प्रकार माता पिता के उपकारों की कोई गिनती नहीं कर सकता। परन्तु मनुष्य को अपने उपकारी माता पिता नज़र नहीं आते। कई सुन्दर घटनाओं के द्वारा इस बात को स्पष्ट किया गया कि किस प्रकार एक एक माता पिता अपनी संतान से दुखी होने पर, लज्जित होने पर अपने होश खो बैठते हैं व कई कई माता पिता आत्म हत्या कर लेते हैं।

उच्च भावों के बिना धर्म नहीं होता। उच्च भावों से विहीन बेटे माता पिता के साथ किस तरह जुल्म करते हैं, उसके बारे में बताया गया। सम्मान का सत्कार का, श्रद्धा का शुक्रगुजारी का, हमदर्दी का अकाल पड़ा हुआ है।

भगवान देवात्मा का मिशन शुक्रगुजार बेटे बनाने का काम करता है। सभापति जी ने फरमाया कि अगर किसी ने श्रवण कुमार देखना हो तो मैं तुम्हें दिखा सकता हूँ। भगवान देवात्मा ने कितने ही बेटे बेटियों के व्यवहार बदलकर श्रवण कुमार बनाया है और घटनाओं के इलावा श्रीमान शादी लाल जी की भी घटना सुनाई। माता पिता अपने संतान को क्या क्या देते हैं। इन चार बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। शक्ल, अक्ल, संस्कार, हार्दिक पूंजी।

फिर बताया गया कि संतान को उच्च संस्कार देने चाहिए। सभा अच्छी प्रभावशाली रही। कितने जनों के दिल भरे हुए थे। कुछ बेबस आंसू बहा रहे थे। सभापति जी ने हाजरीन को कहा कि माता पिता के सम्बंध में किसी को कुछ महसूस होता तो ब्यान कर सकते हैं। इस पर कुछ जनों ने

अपने भावों का प्रकाश किया।

श्रीमान मधु सूदन जी : ने जारों कतार रोते हुए कहा कि बहुत खुशी की बात है कि मेरी माता जी आज यहां हमारे दरम्यान है। उनका कर्जा और उपकार किसी प्रकार भी मैं ब्यान नहीं कर सकता। मैं मां को (बहुत दुखी दिल से) बहुत गलत और अनुचित बोलता था।

उन्होंने बजुर्ग श्रीमती माता विद्यावती जी खेड़ा के चरणों में भी नमन किया कि जिन्होंने इस अद्वितीय दर से मुझे जोड़ा है। उनका ऋण भी कभी चुका नहीं सकता। अपना अदना रूप दिखाई देता रहा है। अब तो अपनी माता की पूजा करने को दिल करता है। यह कहते हुए बेबस फूट पड़े और जाकर अपनी माता जी के चरणों में ढेर हो गए और देर तक पाक आंसू बहाते रहे।

श्रीमती प्रि: सुरजीत बराड़ जी : भरे दिल से और तर आंखों से कहा कि पहला अवसर है कि जब मेरे दोनों माता पिता इस दुनियां में नहीं हैं। उनके उपकारों का ब्यान नहीं हो सकता। माता पिता ने कमाल की विरासत दी है, दिमाग दिए हैं। उच्च भावों की पूंजी दी है। पिता जी का महाउपकार है कि उन्होंने गुरु महाराज से जोड़ा है। इस कारण ही आज ऐसा महसूस हो रहा है। मां ने बेहद प्यार दिया। माता जी ने हमें शिक्षा देने में बहुत कुर्बानी की है। बच्चों को दिया प्यार बहुत बड़ा बनकर हमें वापिस मिल रहा है। अपनी कमजोरियों के कारण बच्चे और लाभ नहीं उठा सके बहुत कठिनाईयों में से गुजरकर मां बाप ने हमें पाला है।

मां ने एक तरफ पिता जी को उनकी

सख्त बीमारी में संभाला दूसरी तरफ फार्म को सम्भाला और हमारी तालीम को बराबर जारी रखवाया। आज के दिन उनको याद करके श्रद्धांजलि देती हूँ। उनको कभी ऊंचा बोलने और खराब व्यवहार देने से सदा बची रही हूँ। यह सौभाग्य महसूस होता है। आज के दिन बच्चों को बड़ा याद किया। बच्चे हमेशा हमारी सेहत का, दवाई का, सुख का बेहद ख्याल रखते हैं। बचपन में समाज के वातावरण से जो शिक्षा पाई उनका लाभ अब महसूस करते हैं। मेरी पोती Faith हमें बहुत प्यार करती है। दुखी होने नहीं देती। यह बहुत कीमती धरोहर है माता पिता के लिए। बच्चों के शुभ के लिए सदा कामना निकलती है।

एक बजने को हो गया। सभापति जी ने सौभाग्यवान संतान को, जिनके माता पिता उपस्थित थे, उनका अर्चन करने और प्रणाम करने की प्रेरणा की। इस पर सब ने एक एक करके प्रणाम का साधन किया। बहुत ही स्वर्णीय दृश्य पैदा हुआ। डाक्टर खेड़ा और उनकी बहन प्रि: शशी बाला जी ने भाव विभोर हो कर अपनी

माता के चरणों में गिरकर और उनके गले लगकर जिस तरह सम्मान प्रदर्शन किया, उसका दृश्य खेंचा नहीं जा सकता। इस तरह बहुत ही स्वर्णीय और निराला वातावरण पैदा हुआ। एक बहुत माननीय अफसर जो प्रायः पहली बार ही अपने परिवार समेत इस सभा में शामिल हुए थे, फूट फूट कर रोते हुए सभापति जी के पांवों में झुक रहे थे और बहुत आग्रह करके सभापति जी का अर्चन किया। सभी के अर्चन व प्रणाम का साधन कर चुकने के बाद खड़े होकर गुरु महाराज की जय ध्वनि की। इसके पश्चात सब हाजरीन को बैठ जाने का निवेदन किया और उन्हें मिष्ठान, दूध आदि से सब की सेवा की। सब आपस में खुशी से मिल रहे थे। पाक खुशी और आनन्द से हृदय भर रहे थे और गुरु महाराज को धन्यवाद दे रहे थे। प्रायः एक बज कर तीस मिनट पर सब हाजरीन अपने अपने स्थानों को पधार गए।

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" चण्डीगढ़ ने **Surya Laser Den, # 68, Shop No. 3, Badheri, Sector-41-D, Chandigarh** से प्रकाशित किया।

सम्पादक डा० विनोद खेड़ा

